स्थापना
अधिवेशन 3

आधुनिक दिन का आशचर्यकर्म

आधुनिक दिन का आश्चर्यकम

परिचय

पिछले दो अधिवेश्नों में हमने यह सीखा कि :

- विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता, उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।

- यीशु के आने का वास्तविक कारण इस धरती पर परमेश्वर के राज्य को लाना था।

1) उसका प्रथम संदेश... ''परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुचा है''

2) उसकी प्रथम प्रार्थना.....''तेरा राज्य आए''

3) उसकी प्रथम प्राथमिकता.....''पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो''

- हम तब बचाए जाते है जब हम यीशु को अपने दिलों और जीवनों पर अपना राज्य स्थापित करने की अनुमति देते है।

प्रश्न ये है कि ':

- हम कैसे इसमें प्रवेश करें?

- कैसे हम उसके राज्य के नागरिक बन सकते है?

इसका उत्त्र यह है कि :

- ''आधुनिक दिन का एक आश्चर्य क्रम''

- ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हरेक व्यक्ति को ''नए जन्म'' की जरूरत है। इसके लिए उसे अपने अस्तित्व के सबसे गहरे स्थान को मसीह के लिए खोल देना होगा और मसीह को अपने जीवन के सिहांसन पर व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में बैठा देना हेागा।''

आधुनिक दिन का आशचर्यकम

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हर एक को अपने आत्मिक जीवन में ''नया जन्म'' पाना अवश्य है, उसे अपने अस्तित्व के केन्द्र को यीशु के लिए खोलना है और यीशु को अपने जीवन के सिहांसन पर विराजमान करना है और उद्धारकर्ता करके ग्रहण करना है।

आत्मिक जन्म की आवश्यकता – आपको नया जन्म लेना जरूरी है।

ये ''नये जन्म'' का व्यापार कहां से मिलता है?

''फरीसियों में से एक निकोदिमुस नाम का एक मनुष्य था जो यहूदियों का सरदार था , उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है क्योंकि इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता, निकोदिमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बुढ़ा हो गया हो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है, अचम्भा न कर कि मैंने तुझे कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना आवश्य है, हवा जिधर चाहती है उधर चलती है। और तू उसका शब्द सुनता हैं परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।'' यहून्ना 3:1–8

निकोदिमुस कौन है?

एक फरीसी ..... अत्यन्त घार्मिक, व्यवस्था का पालन करने वाला

सनेहद्रीन (न्यायालय) का एक सदस्य ..... अपने लोगों का न्यायी, प्रभावशाली व्यक्ति, सामर्थी और अच्छी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति

– सांस्कृतिक व्यक्ति, धनी और विद्धान
– प्रार्थनामयी व्यक्ति, निसंदेह धर्मी और शुद्ध

निकोदिमुस को :

''पानी से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **शारीरिक जन्म**

और

''आत्मा से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **आत्मिक जन्म**

ये कितना अच्छा उदाहरण है :
मां के गर्भ में बन्द, सिकुड़े हुए, अन्धकार में, पूरी तौर से मां के जीवन पर निर्भर, एक दिन भ्रूण के पास अपनी सामर्थ होती है जो उसकी अपनी ताकत से उपर है पर ये इस बात का निश्चय है कि वह शारिरीक रूप से जन्म लेकर इस संसार में आ जाए। इस जन्म से सभी शारिरीक, मानसिक और जरूरतमन्द आवश्यकतांए दी गई हैं जो एक साधारण मनुष्य के जीवन के जीने के लिए होती हैं, इसे विकसित होना है और छुटकारा देना है। इस शारिरीक जन्म बिना कोई भी मानव की नाईं नहीं जी सकता।

आत्मिक जन्म की आवश्यकता

. यीशु मसीह ने ''नया जन्म'' की परिकल्पना यहुन्ना के सुसमाचार अध्याय तीन में नीकोदीमुस नाम के एक व्यक्ति से की। यहून्ना 3:1—8 पढ़ें।

नीकोदीमुस कौन था?

- एक साधारण पापी नहीं
- एक प्रसिद्ध नागरिक
- यरूश्लेम में न्यायी लोगों की सभा में से
- **एक फरीसी**... बहुत ही धार्मिक व्यक्ति
- **सनेहद्रीन (न्यायालय) का एक सदस्य**... राष्ट्रीय न्यायालय का एक सदस्य, एक न्यायी समाज के उंचे वर्ग का एक सदस्य

नीकोदीमुस यीशु के पास आता है। उसके जीवन में कुछ कमी थी। यद्यपि वह उच्च धार्मिक और नैतिक व्यक्ति था। यीशु के पास ऐसा कुछ था जो उसके पास नहीं था।

- नीकोदीमुस ने यीशु को बड़ा आदर दिया....

- यीशु ने उसकी जरूरत को देखा और वह बड़े ही रूखे और सीधे शब्दों में उससे कहने लगा :

  — यहून्ना 3:3... ''जब तक तुम नया जन्म नहीं पाते तब तक परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकते!'

  — यहून्ना 3:4... नीकोदीमुस की प्रतिक्रिया? उलझन से भरी हुई।'' कैसे एक व्यक्ति फिर से जन्म ले सकता है?''

  — यहून्ना 3:5—6... यीशु दो जन्मों के द्वारा उसकी व्याख्या करते हैं।

  — पानी से जन्मा हुआ = **शारीरिक जन्म**

  — आत्मा से जन्मा हुआ = **आत्मिक जन्म**

  — मनुष्य शारिरीक जन्म को पैदा करता है परन्तु परमेश्वर का आत्मा केवल आत्मिक जन्म को पैदा करता है।

आधुनिक दिन का आशचर्यकम

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हर एक को अपने आत्मिक जीवन में ''नया जन्म'' पाना अवश्य है, उसे अपने अस्तित्व के केन्द्र को यीशु के लिए खोलना है और यीशु को अपने जीवन के सिहांसन पर विराजमान करना है और उद्धारकर्ता करके ग्रहण करना है।

आत्मिक जन्म की आवश्यकता – आपको नया जन्म लेना जरूरी है।

ये ''नये जन्म'' का व्यापार कहां से मिलता है?

''फरीसियों में से एक निकोदिमुस नाम का एक मनुष्य था जो यहूदियों का सरदार था , उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है क्योंकि इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता, निकोदिमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बुढ़ा हो गया हो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है, अचम्भा न कर कि मैंने तुझे कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना आवश्य है, हवा जिधर चाहती है उधर चलती है। और तू उसका शब्द सुनता हैं परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।'' यहून्ना 3:1–8

निकोदिमुस कौन है?

एक फरीसी ..... अत्यन्त घार्मिक, व्यवस्था का पालन करने वाला

सनेहद्रीन (न्यायालय) का एक सदस्य ..... अपने लोगों का न्यायी, प्रभावशाली व्यक्ति, सामर्थी और अच्छी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति

– सांस्कृतिक व्यक्ति, धनी और विद्धान
– प्रार्थनामयी व्यक्ति, निसंदेह धर्मी और शुद्ध

निकोदिमुस को :

''पानी से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **शारीरिक जन्म** .....

और

''आत्मा से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **आत्मिक जन्म** .....

ये कितना अच्छा उदाहरण है :
मां के गर्भ में बन्द, सिकुड़े हुए, अन्धकार में, पूरी तौर से मां के जीवन पर निर्भर, एक दिन भ्रूण के पास अपनी सामर्थ होती है जो उसकी अपनी ताकत से उपर है पर ये इस बात का निश्चय है कि वह शारिरीक रूप से जन्म लेकर इस संसार में आ जाए। इस जन्म से सभी शारिरीक, मानसिक और जरूरतमन्द आवश्यकतांए दी गई हैं जो एक साधारण मनुष्य के जीवन के जीने के लिए होती हैं, इसे विकसित होना है और छुटकारा देना है। इस शारिरीक जन्म बिना कोई भी मानव की नाईं नहीं जी सकता।

<u>पढिए</u> उस ''अच्छे उदाहरण को''..... ''बन्द और सिकुड़ा हुआ .....''

> मां के गर्भ में बन्द, सिकुड़े हुए, अन्धकार में, पूरी तौर से मां के जीवन पर निर्भर, एक दिन भ्रूण के पास अपनी सामर्थ होती है जो उसकी अपनी ताकत से उपर है पर ये इस बात का निश्चय है कि वह शारिरीक रूप से जन्म लेकर इस संसार में आ जाए। इस जन्म से सभी शारिरीक, मानसिक और जरूरतमन्द आवश्यकतांए दी गई हैं जो एक साधारण मनुष्य के जीवन के जीने के लिए होती हैं, इसे विकसित होना है और छुटकारा देना है। इस शारिरीक जन्म बिना कोई भी मानव की नाईं नहीं जी सकता।
>
> वैसे ही आत्मिक जन्म के साथ है। पाप और अनधकार में बन्द और सिकुड़ा हुआ। एक दिन सामर्थ जो अधिक सामर्थ है (पवित्रआत्मा की सामर्थ) आपके उपर आती है और आप आत्मिक रूप से इस संसार में जन्म लेते हैं। जीने के लिए सभी आवश्यक चीजें इस जन्म में दी जाती हैं उसके बिना आप आत्मा में जीवित नहीं रह सकते।''

अब यह वह स्थान है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते है — वह स्थान जहां हम पश्चाताप करते हैं, वह स्थान जहां हम भरोसा करते हैं जहां हम उसे अपना प्रभु मानने के लिए अपने आपको दे देते हैं!

और तब अचानक कुछ आलौकिक घटना घटती है — परमेश्वर के द्वारा हममें एक आश्चर्यकर्म पैदा किया जाता है उस समय जब हम मसीह को अपने आप को सौंप देते हैं।

आधुनिक दिन का आशचर्यकम

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हर एक को अपने आत्मिक जीवन में ''नया जन्म'' पाना अवश्य है, उसे अपने अस्तित्व के केन्द्र को यीशु के लिए खोलना है और यीशु को अपने जीवन के सिहांसन पर विराजमान करना है और उद्धारकर्ता करके ग्रहण करना है।

आत्मिक जन्म की आवश्यकता – आपको नया जन्म लेना जरूरी है।

ये ''नये जन्म'' का व्यापार कहां से मिलता है?

''फरीसियों में से एक निकोदिमुस नाम का एक मनुष्य था जो यहूदियों का सरदार था , उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है क्योंकि इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता, निकोदिमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बुढ़ा हो गया हो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?, यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच–2 कहता हूं कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है, अचम्भा न कर कि मैंने तुझे कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना आवश्य है, हवा जिधर चाहती है उधर चलती है। और तू उसका शब्द सुनता हैं परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।'' यहून्ना 3:1–8

निकोदिमुस कौन है?

एक फरीसी ..... अत्यन्त घार्मिक, व्यवस्था का पालन करने वाला

सनेहद्रीन (न्यायालय) का एक सदस्य ..... अपने लोगों का न्यायी, प्रभावशाली व्यक्ति, सामर्थी और अच्छी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति

– सांस्कृतिक व्यक्ति, धनी और विद्धान
– प्रार्थनामयी व्यक्ति, निसंदेह धर्मी और शुद्ध

निकोदिमुस को :

''पानी से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **शारीरिक जन्म**

और

''आत्मा से जन्मा हुआ'' होना चाहिए = **आत्मिक जन्म**

ये कितना अच्छा उदाहरण है :
मां के गर्भ में बन्द, सिकुड़े हुए, अन्धकार में, पूरी तौर से मां के जीवन पर निर्भर, एक दिन भ्रूण के पास अपनी सामर्थ होती है जो उसकी अपनी ताकत से उपर है पर ये इस बात का निश्चय है कि वह शारिरीक रूप से जन्म लेकर इस संसार में आ जाए। इस जन्म से सभी शारिरीक, मानसिक और जरूरतमन्द आवश्यकतांए दी गई हैं जो एक साधारण मनुष्य के जीवन के जीने के लिए होती हैं, इसे विकसित होना है और छुटकारा देना है। इस शारिरीक जन्म बिना कोई भी मानव की नाईं नहीं जी सकता।

आओ अब हम उन बातों की जो ''नहीं हो सकती'' हैं जिनकी घोषणा यीशु ने की, की चर्चा करें

यहां पर कम से कम तीन ऐसे कारण हैं जो हमें नया न होने की स्थिति में परमेश्वर के राज्य में जाने से रोकते हैं :

1) ''एक बार उत्पन्न'' हुआ व्यक्ति आत्मिक रूप से मरा हुआ है।

- इफिसीयों 2:5—6... ''अपराधों के कारण मरे हुए''
- प्रशिक्षण पुस्तिका में बना चित्र — मनुष्य के पास शरीर है (उसका घर), प्राण है (सोचता, बोलता, महसुस करता है) और एक आत्मा है (परमेश्वर के साथ संगति मे रहने वाला हिस्सा)... हमारी आत्मा पाप के कारण मरी दशा में है।
- आदम और हव्वा की कहानी — जिसमे सारी मानव जाति प्रस्तुत है।
- उनकी आत्मा निषेध के कारण मरी दशा में चली गई
- वे परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिए गए और उन्होंने मरना आरम्भ कर दिया। उनका पूरा जीवन प्रभावित हो गया।
- इसके बाद से मनुष्य अब केवल दो तत्वों (शरीर और प्राण) से क्रियान्वन्त रहेगा, और वे क्षतिग्रस्त हो गए।

वैसे ही आत्मिक जन्म के साथ होता है। पाप और अनधकार में बन्द और सिकुड़ा हुआ। एक दिन आपमें एक बड़ी सामर्थ (पवित्रआत्मा की सामर्थ) जो आपकी सामर्थ से बड़ी है चलायमान हो जाती है और आत्मिक संसार में जन्म के आश्चर्यकम को प्रगट करती है। इस जन्म के साथ आत्मिक जीवन को जीने के लिए सभी तरह के औजार और आत्मिक सामर्थ को दिया जाता है। इस आत्मिक जन्म के बिना कोई भी आत्मिक मानव की नाईं नहीं जी सकता।

1. ''एक बार उत्पन्न हुआ'' मानव आत्मिक रूप से मृतक है।

''जब हमे अपराधों के कारण मरे हुए थे तो मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है) ओर मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों मं उसके साथ बैठाया''– इफिसीयों 2:5–6

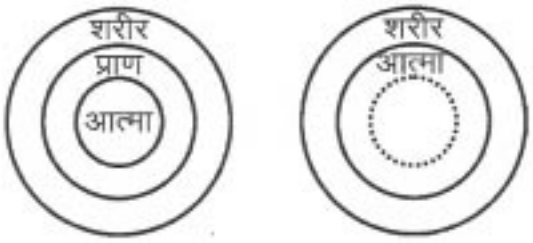

शरीर – वह घर जिसमें वह रहता है

प्राण – मनुष्य का वह हिस्सा जो सोचता , बोलता, योजना बनाता, तर्क करता है।

आत्मा – मनुष्य का वह हिस्सा जो (उत्पति 1:27) परमेश्वर केसाथ संगति करने और हमेशा जीवित रहने के लायक है।

2. वह आत्मिक बात की सराहना करने या समझने के योग्य नहीं है।

'जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर ना चमके – 2कुरिन्थियों 4:4 (देखिए 1कुरिन्थियों 2:14)

3. वह आत्मिक और शारिरीक रूप से जीने की योग्यता प्राप्त करें
यहुन्ना 3 : 5–6

आत्मिक जन्म का आश्चर्यकर्म

निकोदीमुस ने आश्चर्यकर्म की बात की, और यीशु ने उससे महानतम आश्चर्यकर्म की बात कही जो नया जन्म है।

1. परमेश्वर आश्चर्यकर्म करता है। जब आप परमेश्वर के पुत्र को अपने जीवन के सिहांसन पर बैठने के लिए आमंत्रित करते हैं और परमेश्वर के राज्य को ग्रहण करते हो तो एक नये आत्मिक जीवन का जन्म होता है।

2) ''एक बार उत्पन्न हुआ'' व्यक्ति आत्मिक बातों की प्रशंसा करने या समझने के लायक नहीं है

- 1कुरि. 2:14 — हम आत्मा की बातों को नहीं समझ सकते; केवल वही जिन्हे पवित्रआत्मा दिया गया है वही समझ सकते हैं।
- 1कुरि. 4:4 — हम आत्मिक रूप से अंधे हैं
- उदाहरण — अंधा व्यक्ति और चावल की हरी फसल
- उदाहरण — एक लड़की जिसकी आंखे थी अब तारों भरी रात को देखती है (यह रात तो पहले से ही वहां थी; परन्तु वह उसे देखने के येाग्य नहीं थी)।

3) ''एक बार उत्पन्न हुआ'' व्यक्ति को आत्मिक ओर शारिरीक रूप से जीने की **योग्यता प्राप्त करनी** चाहिए

- उदाहरण — एक पीछा किए जा रहा अपराधी भागता हुआ प्रार्थना सभा में पहुंचा जहां लोग परमेश्वर की आराधना और स्तुति कर रहे हैं। क्या वह वहां पर खुश होगा? नहीं, वह ऐसा महसूस करेगा जैसे बिन पानी के मछली होती है। वह उस स्थान को छोड़ना चाहेगा क्योंकि उसे आत्मिक वातावरण में शामिल हेाने की ''योग्यता'' प्राप्त नहीं है।

नए जन्म के आश्चर्यकर्म के द्वारा हमारा आत्मिक पुर्नजन्म होता है, हम आत्मिक बातों को समझने की योग्यता प्राप्त करते हैं और हम जीवन को जीने की योग्यता भी प्राप्त करते हैं।

आत्मिक जन्म का आश्चर्यकर्म

नीकोदीमुस यीशु के आश्चर्यकर्म से चकित था, तब यीशु ने उससे महानतम जरूरत ... ''नया जन्म'' के आश्चर्यकर्म की बात की।

1. यीशु मसीह चाहता था कि नीकोदीमुस यह जान ले कि नया जन्म परमेश्वर द्वारा पैदा किया हुआ आश्चर्यकर्म है।

वैसे ही आत्मिक जन्म के साथ होता है। पाप और अनधकार में बन्द और सिकुड़ा हुआ। एक दिन आपमें एक बड़ी सामर्थ (पवित्रआत्मा की सामर्थ) जो आपकी सामर्थ से बड़ी है चलायमान हो जाती है और आत्मिक संसार में जन्म के आश्चर्यक्रम को प्रगट करती है। इस जन्म के साथ आत्मिक जीवन को जीने के लिए सभी तरह के औजार और आत्मिक सामर्थ को दिया जाता है। इस आत्मिक जन्म के बिना कोई भी आत्मिक मानव की नाईं नहीं जी सकता।

1. ''एक बार उत्पन्न हुआ'' मानव आत्मिक रूप से मृतक है।

''जब हमे अपराधों के कारण मरे हुए थे तो मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है) ओर मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों मं उसके साथ बैठाया''– इफिसीयों 2:5–6

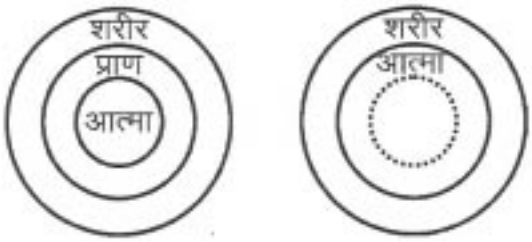

शरीर – वह घर जिसमें वह रहता है

प्राण – मनुष्य का वह हिस्सा जो सोचता , बोलता, योजना बनाता, तर्क करता है।

आत्मा – मनुष्य का वह हिस्सा जो (उत्पति 1:27) परमेश्वर केसाथ संगति करने और हमेशा जीवित रहने के लायक है।

2. वह आत्मिक बात की सराहना करने या समझने के योग्य नहीं है।

'जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर ना चमके – 2कुरिन्थियों 4:4 (देखिए 1कुरिन्थियों 2:14)

3. वह आत्मिक और शारिरीक रूप से जीने की योग्यता प्राप्त करें
यहुन्ना 3 : 5–6

आत्मिक जन्म का आश्चर्यकर्म

निकोदीमुस ने आश्चर्यकर्म की बात की, और यीशु ने उससे महानतम आश्चर्यकर्म की बात कही जो नया जन्म है।

1. परमेश्वर आश्चर्यकर्म करता है। जब आप परमेश्वर के पुत्र को अपने जीवन के सिहांसन पर बैठने के लिए आमंत्रित करते हैं और परमेश्वर के राज्य को ग्रहण करते हो तो एक नये आत्मिक जीवन का जन्म होता है।

- उदाहरण : भूमि के बीज

    ० हम नहीं जानते के बीज में जीवन है या नहीं

    ० प्रकृति की शक्ति उनमें काम करती है

    ० उनकी जड़ें धरती के नीचे बढ़ना आरम्भ करती हैं

    ० अचानक से.... अरे! वहां पर जीवन है; एक छोटा सा पौधा धरती में से निकल पड़ता है

    ० उस मरे हुए से दिखने वाले बीज में से एक नया जीवन आरम्भ होता है।

- हम इस पर नियंत्रण नहीं करते; हम इसका आरम्भ नहीं करते

- बीज के उदाहरण के नीचे दिए गए संदर्भ को पढ़े

- उदाहरण : यीशु की माता मरियम

    ० परमेश्वर का आत्मा उसके अन्दर प्रवेश किया

    ० उसने उसमें बीज को बोया

    ० और उसने उस पर नियंत्रण कर लिया और उसमें बढ़ने लगा

    ० और तब सही समय पर, यह जन्म के द्वारा बाहर आ गया। परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन में जन्म लिया... देह धारण!

- यही घटना हमारे साथ घटती है जब हमारा नया जन्म होता है... पवित्र आत्मा हममें नया जन्म उत्पन्न करता है

उदाहरण : भूमि के बीज

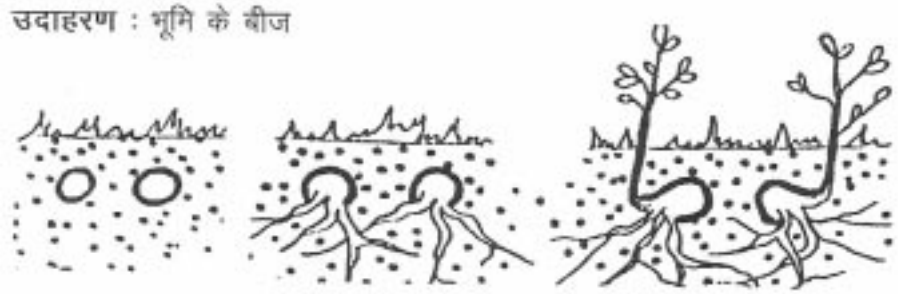

कोई व्यक्ति अपने आप निर्णय नहीं लेता। ठीक है, अभी मैं आपके राज्य में आ रहा हूं। क्या आप नहीं जानते कि परमेश्वर आपमें बहुत समय से काम कर रहा है? परमेश्वर का वचन आपके दिल में रोपा गया था। आपने एक उत्तेजना को अपने हृदय मे महसुस किया था। आपके अन्दर परमेश्वर का वचन उगा। आपके जीवन में नम्रता आई। तब सही समय में पवित्र आत्मा ने जीवन को तोड़ा और यह सभी के लिए देखने का कारण हुआ। एक नए जीवन का आरम्भ हुआ।

उदाहरण : यीशु की माता मरियम

2. ये पूर्ण रूप से परमेश्वर के द्वारा उत्पदित हैः

उदाहरण : लारवा जो उड़ना चाहता था

''क्योकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है और ये तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। कर्मो से नहीं, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसीयों 2:8–9)

या

(जैसा ''संदेश'' पुस्तक में लिखा है) बचाने का काम और विचार उसी का है। जो हम करते हैं बस केवल मात्र उस पर भरोसा करते हैं कि उसे ही करने दें। शुरूआत से अन्त तक ये परमेश्वर का वरदान है!... अब ना हम अपने आप को बनाते और न हम बचाते हैं। परमेश्वर ही बनाना और बचाना दोनों काम करता है।

हमारे नए जन्म के बारे में तीन बातें को लिख लें ।

– **परमेश्वर की इच्छा** .....द्वारा उत्पन्न होता है

जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया...जो जन्में थे पर खून से नहीं, और ना शरीर की अभिलाषाओं से और ना मनुष्य की इच्छा से परन्तु परमेश्वर की इच्छा से। – यहून्ना 1:12–13

– **परमेश्वर के वचन** .....द्वारा उत्पन्न होता है

क्योंकि तुमने नाशमान नहीं परन्तु अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। – 1पतरस 1:23

2. <u>यह नया जीवन परमेश्वर द्वारा उत्पन्न होता है — न कि हमारे द्वारा</u>

- इफि. 2:8—9.... ''परमेश्वर ने हमें जो हमने उस पर विश्वास किया तो अनुग्रह से बचाया है और आप इसकी महिमा नहीं ले सकते; यह परमेश्वर का वरदान है। 9 उद्धार भले कामों का जो हमने किए हैं का ईनाम नही है, इसलिए कि कोई इसके लिए धमण्ड नहीं कर सकता।''(लीविंग बाइबल के अनुवाद से)

- उदाहरण : लारवा जिसने तीतली को उड़ते हुए देखा ओर वह भी उसकी तरह उड़ना चाहता था

    - लारवा ने अपना सिर उठाया और भूमि से चलता हुआ एक किनारे पर पहुचं गया यह सोचते हुए कि अब उड़ सकता है और उसने उड़ने की कोशिश की और आप जानते हैं कि उसको साथ क्या हुआ

    - तब किसी ने उससे कहा कि उसे उड़ने की तकनीकों का अध्ययन करना चाहिए इसलिए वह विद्यालय चला गया और पढ़ने लगा और उसने कहा, ''ठीक है अब मैं सभी बातों को जानता हूं।'' और फिर वह दिन आ गया उड़ने की फिर से कोशिश की और अपनी नाक घायल करके बैठ गया।

    - हताश, उसने आशा छोड़ दी ओर कहने लगा, ''मैं अपने घरोंदें में चला जाऊंगा।'' और वह अपने घरोंद मे चला गया और गायब हो गया

    - पर एक आश्चर्यकर्म हो गया। कुछ महीनों के बाद उसका घरोंदा टुट गया और अनुमान लगाओं कि उसमें से क्या बाहर आया होगा? यही तो लारवा हमेशा बनना चाहता था। अब वह एक तीतली था अपने सुन्दर शरीर के द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे पर उड़ रहा था।

- ऐसा ही हमारे साथ घटता है जब हमारा नया जन्म होता है

    - हम अपने कामों से परमेश्वर को प्रसन्न करना बन्द कर देते हैं

    - हम अपने जीवनों में यीशु को ग्रहण करते हैं

    - और वह एक आश्चर्यकर्म प्रकट करता है

- अब अपने प्रशिक्षण पुस्तिका में नए जन्म के बारे में तीन बातों को नोट करें

    - यह **<u>परमेश्वर की इच्छा</u>** के द्वारा उत्पन्न होता हैं

    - यह **<u>परमेश्वर के वचन</u>** के द्वारा उत्पन्न होता हैं

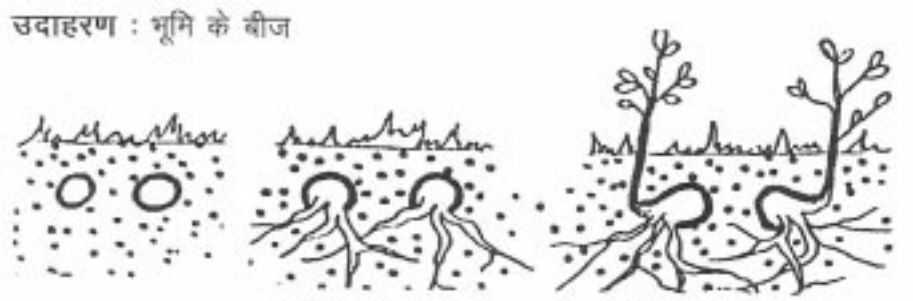

कोई व्यक्ति अपने आप निर्णय नहीं लेता। ठीक है, अभी मैं आपके राज्य में आ रहा हूं। क्या आप नहीं जानते कि परमेश्वर आपमें बहुत समय से काम कर रहा है? परमेश्वर का वचन आपके दिल में रोपा गया था। आपने एक उत्तेजना को अपने हृदय मे महसुस किया था। आपके अन्दर परमेश्वर का वचन उगा। आपके जीवन में नम्रता आई। तब सही समय में पवित्र आत्मा ने जीवन को तोड़ा और यह सभी के लिए देखने का कारण हुआ। एक नए जीवन का आरम्भ हुआ।

उदाहरण : यीशु की माता मरियम

2. ये पूर्ण रूप से परमेश्वर के द्वारा उत्पदित हैः

उदाहरण : लारवा जो उड़ना चाहता था

''क्योकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है और ये तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। कर्मो से नहीं, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसीयों 2:8–9)

या

(जैसा ''संदेश'' पुस्तक में लिखा है) बचाने का काम और विचार उसी का है। जो हम करते हैं बस केवल मात्र उस पर भरोसा करते हैं कि उसे ही करने दें। शुरूआत से अन्त तक ये परमेश्वर का वरदान है!... अब ना हम अपने आप को बनाते और न हम बचाते हैं। परमेश्वर ही बनाना और बचाना दोनों काम करता है।

हमारे नए जन्म के बारे में तीन बातें को लिख लें ।

– **परमेश्वर की इच्छा** .....द्वारा उत्पन्न होता है

जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया...जो जन्में थे पर खून से नहीं, और ना शरीर की अभिलाषाओं से और ना मनुष्य की इच्छा से परन्तु परमेश्वर की इच्छा से। – यहून्ना 1:12–13

– **परमेश्वर के वचन** .....द्वारा उत्पन्न होता है

क्योंकि तुमने नाशमान नहीं परन्तु अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। – 1पतरस 1:23

- यह **<u>परमेश्वर की आत्मा</u>** के द्वारा उत्पन्न होता हैं

- ये तीनों बातें मिलकर काम करती है — परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का आत्मा। हम इस पर नियत्रंण नहीं करते और न ही इसका आरम्भ करते हैं परन्तु ये तीनों हमारे बीच में पवित्रआत्मा के द्वारा काम करता है जो आत्मिक जीवन को ले आता है। ये सब कुछ परमेश्वर की ओर से है।

3. <u>पवित्रआत्मा हममें रहने आता है</u>

- रोमियों 8 — पवित्रआत्मा हमारे नए जन्म होने के लिए बिचवई का काम करता है

- याद रखें, जैसे पवित्रआत्मा ने मरियम में जीवन उत्पन्न किया था, इसी तरह से पवित्रआत्मा परमेश्वर का जीवन आपमें और मुझमें उत्पन्न करता है!

- रोमियों 8:9 — यदि वह हममें नहीं आया — रहने नहीं लगा — तब नए जन्म का कोई आश्चर्यकर्म असल में प्रकट हुआ ही नहीं।

- रोमियों 8:16 — हम प्रार्थना कर सकते हैं कि पवित्रआत्मा उनके बारे में ''गवाही देगा'' जो मसीह को ग्रहण करते हैं कि वे परमेश्वर की संतान है।

- वह नया जीवन उत्पन्न करता है और उसकी नियमित उपस्थिति इसे जीवित बनाए रखती है और इसे आपमें क्रियाशील रखती है

- <u>यह दोंनों अर्थात उत्साहजनक और निरूतर करने वाली बात है</u>

    - परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह असल में हमारे जीवन का हिस्सा हो जाना चाहता है।

    - आत्मिक जन्म का आश्चर्यकर्म इतना रोमांचकारी है कि आप धरती पर उसके निवास स्थान है! जरा सोचिए इसके बारे में।

    - पर अब जब वह आपके अन्तर में वास कर रहा है — वह वहां ''जाता'' है जहां आप जाते हो, वह वह ''करता'' है जो आप करते है, वह वैसा ''सोचता'' है जैसा आप सोचते हैं, वह वैसा ''कहता'' है जैसा आप कहते हैं!

    - असल में हम परमेश्वर के व्यक्तित्व को गन्दी नाली की ओर खींच देते हैं जब हम अपने पापमय रास्तों की ओर मुड़ जाते हैं उन शर्मिन्दगी वाली बातो को करते है, में जीवन व्यतीत करते हैं, को बोलते हैं।

— **परमेश्वर की आत्मा** .....द्वारा उत्पन्न होता है

.....अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्रआत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला''। तीतुस 3:5—6

1. पवित्रआत्मा हममें रहने के लिए आता है।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मन्दिर हो ओर कि पवित्रआत्मा तुममे वास करता है? 1कुरिन्थियों 3:16 और 6:19—20

अब जो शरीर में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते, परन्तु तुम शारिरीक नहीं पर आत्मिक हो, यदि सच मे परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है, अब यदि जिसमें मसीह की आत्मा नहीं वह उसका जन नहीं।

आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। — रोमियों 8 : 8—9, 16

आत्मिक जन्म के परिणाम

1. एक नया हृदय पाते हैं

''मैं तुमको नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे''। — यहेजकेल 36 : 26—27

2. ये पूरा और स्थाई बदलाव प्रारम्भ करता है

इसलिए यदि कोई मसीह यीशु में है तो पुरानी बातें बीत गई देखो वे नई हो गई हैं। — 2 कुरिन्थियों 5:17

वहां देखने लायक परिणाम होंगे:

— मन का झुकना
— हृदय का प्रेम
— इच्छा की रीति

सभी बदल जाता है जब नया आत्मिक जीवन सब कुछ ले लेता है।

3. ''वैकल्पिक जीवन शैली'' प्रगट होती है

इस संसार के सदृश्य न बनो पर तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से.....
— रोमियों 12:2

आत्मिक जन्म का परिणाम

· परिचय : आज ''नया जन्म'' एक साधारण सा शब्द है। बहुत लोगों ने इसके अर्थो में मिलावट कर दी हैं और इसके सही अर्थों का मूल्य नहीं रहा इसलिए हमें यह अधिवेश्न इस बात पर बिताना कि नए जन्म का वास्तविक अर्थ क्या है।

1. हम एक नया हृदय पाते हैं।

- नीकोदीमुस इस बात को जानता होगा — वह यहेजकेल 36 की जानकारी रखता होगा.... *''मैं तुमको नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे''।*

- हम अपने आप से कुछ नहीं कर सकते जो परमेश्वर हमसे चाहता है; पर वह दिन आने वाला है जब सब कुछ बदल जाएगा।

- परमेश्वर ने ''हृदय प्रतिरोपण'' का वायदा किया है केवल पुराने हृदय को मुरम्मत या इसे शक्तिशाली बनाने का ही नहीं परन्तु हममें एक नए हृदय को डाल देने का वायदा किया है जिसमें हम प्रेम करने, आज्ञा मानने आदि के योग्य हो जाऐंगे।

— **परमेश्वर की आत्मा** .....द्वारा उत्पन्न होता है

.....अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्रआत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला''। तीतुस 3:5—6

1. पवित्रआत्मा हममें रहने के लिए आता है।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मन्दिर हो ओर कि पवित्रआत्मा तुममे वास करता है? 1कुरिन्थियों 3:16 और 6:19—20

अब जो शरीर में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते, परन्तु तुम शारिरीक नहीं पर आत्मिक हो, यदि सच मे परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है, अब यदि जिसमें मसीह की आत्मा नहीं वह उसका जन नहीं।

आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। — रोमियों 8 : 8—9, 16

आत्मिक जन्म के परिणाम

1. एक नया हृदय पाते हैं

''मैं तुमको नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे''। — यहेजकेल 36 : 26—27

2. ये पूरा और स्थाई बदलाव प्रारम्भ करता है

इसलिए यदि कोई मसीह यीशु में है तो पुरानी बातें बीत गई देखो वे नई हो गई हैं। — 2 कुरिन्थियों 5:17

वहां देखने लायक परिणाम होंगेः
— मन का झुकना
— हृदय का प्रेम
— इच्छा की रीति

सभी बदल जाता है जब नया आत्मिक जीवन सब कुछ ले लेता है।

3. ''वैकल्पिक जीवन शैली'' प्रगट होती है

इस संसार के सदृश्य न बनो पर तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से.....
— रोमियों 12:2

2. <u>ये (आत्मिक जन्म) पूरा और स्थाई बदलाव प्रारम्भ करता है</u>

- यह तो मात्र एक आरम्भ है, किसी भी जन्म के समान, परन्तु जैसे–2 यह बढ़ता है बदलाव को उत्पन्न करता है ।

- 2कुरि. 5:17 (बाइबल के लिविंग अनुवाद में से)– *''जब कोई विश्वासी बन जाता है तब वह अन्दर से पूर्ण रूप से नया व्यक्ति बन जाता है। वह पहले जैसा नहीं रह जाता। एक नए जीवन का आरम्भ होता है।''*

- एक व्यक्ति उसके फल से जाना जाता है

  - अंजीर के पेड़ में कांटे नहीं होते हैं

  - आशिष और श्राप एक ही मुंह से नही आते? नहीं।

- <u>आप उसके बाहरी प्रकटीकरण से जान जाऐंगे कि उसके अन्दर क्या हैं</u>

  - उदाहरण : मक्कई का एक बीज – जीवन का भेद क्या है? नही जानते है – ये ऐसा कुछ है जिसे परमेश्वर ने डाला है। पर जब दाना ऊपर आता है और परिपक्व होता है – फलक से तने तक, तने फूंदने तक, और फूंदने से फसल तक – तब हम जानते हैं कि उस बीज में जीवन है।

  - इसी तरह नये जन्म के साथ होता है, – ये दुःख की बात है कि बहुत सारे इस बात का अंगीकार तो करते हैं पर वे ''अभी तक जन्में'' हुए नहीं हैं। उन्हे किसी तरह का अनुभव हुआ हेागा परन्तु यह नकली है! इसमें वास्तविक जीवन नहीं है।

  - आप इसे जो कुछ भी बुलांए – मैं प्रमाण देखना चाहता हूं, ''नतीजे'' देखना चाहता हूं, क्या आप ऐसा नही चाहते हैं? मैं वो देखना चाहता हूं कि वास्तव में कुछ ऐसा घटा था जिसने एक जीवन को बदल दिया है।

    – मन (दिमाग) का झुकना

    – हृदय का प्रेम (लगाव)

    – इच्छा की रीति (प्रवृति)

3. एक ''वैकल्पिक जीवन शैली'' का प्रकट होना (अगले पृष्ठ पर जारी)

- रोमियों 12:2..... ''इस संसार के व्यवहार और रीति रीवाजों की नकल न करें। परन्तु परमेश्वर आपके सोचने की शक्ति में बदलाव लाकर आपको नए व्यक्ति में बदल दे।''

— **परमेश्वर की आत्मा** .....द्वारा उत्पन्न होता है

.....अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्रआत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला'' / तीतुस 3:5—6

1. पवित्रआत्मा हममें रहने के लिए आता है।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मन्दिर हो ओर कि पवित्रआत्मा तुममे वास करता है? 1कुरिन्थियों 3:16 और 6:19—20

अब जो शरीर में हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते, परन्तु तुम शारिरीक नहीं पर आत्मिक हो, यदि सच मे परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है, अब यदि जिसमें मसीह की आत्मा नहीं वह उसका जन नहीं।

आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। — रोमियों 8 : 8—9, 16

आत्मिक जन्म के परिणाम

1. एक नया हृदय पाते हैं

''मैं तुमको नया मन दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे'' / — यहेजकेल 36 : 26—27

2. ये पूरा और स्थाई बदलाव प्रारम्भ करता है

इसलिए यदि कोई मसीह यीशु में है तो पुरानी बातें बीत गई देखो वे नई हो गई हैं। — 2 कुरिन्थियों 5:17

वहां देखने लायक परिणाम होंगेः
- — मन का झुकना
- — हृदय का प्रेम
- — इच्छा की रीति

सभी बदल जाता है जब नया आत्मिक जीवन सब कुछ ले लेता है।

3. ''वैकल्पिक जीवन शैली'' प्रगट होती है

इस संसार के सदृश्य न बनो पर तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से.....
— रोमियों 12:2

यहां पर '' संसार'' और ''राज्य'' में बहुत बड़ी भिन्नता है

- प्रशिक्षण पुस्तिका में दी गई तालिका का प्रयोग करें... संसार बनाम राज्य

- यशायाह 5:20 *''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अंधियारे को उजाला और उजाले को अंधेरा ठहराते हैं और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा करके मानते हैं?''* क्या आपने आज के समाज में ऐसे प्रमाण देखे हैं?

- ज्योति बनाम अन्धकार – इस पर विचार विमर्श करने की कोशिश करे जब हमारा वास्तव में नया जन्म हो गया है तब हम हमारे अस्तित्व के केन्द्र से बदल जाते हैं – हमारे पास नई आंखें नई इच्छांए और नई समझ होती है।

- उसका जीवन हममें निर्मित होने लगता है–(यह हमें चौथे हिस्से की ओर ले चलता है)

4. सच्ची धार्मिकता उत्पन्न होती है

- फरीसी = **<u>बाहरी</u>** धार्मिकता (धर्म का पालन करना स्वंय के लिए धार्मिकता को कमाना)

- आत्मिक नए जन्में = **<u>भीतरी</u>** धार्मिकता (क्योंकि वह अब हमारे हृदयों पर राज करता है – उसकी धार्मिकता अब हमारे व्यवहार को बदलना आरम्भ करती है)

- 2कुरि. 5:21... ''... ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जांए।''

- 2कुरि. 3:18... ''...हम उसके तेजस्वी रूप में अंश–2 करके बदलते जाते हैं...''

- हमें इस बात को स्पष्ट कर लेना चाहिए कि यदि आप यीशु की नकल करेगे या फिर उनके द्वारा बनाए हुए नियमों की पालना करेंगे तो आप फेल हो जाऐंगे और दयनीय स्थिति में पहुंच जाऐंगे! और एक असम्भव बन्धन होगा।

- यह आपकी धार्मिकता नहीं जिसकी आप स्थापना करने निकले हैं परन्तु उसकी धार्मिकता है – जो वह आप में और आपके द्वारा छोड़ता है (गल. 2:20)

- यहां पर राज्य का मार्ग है – यीशु को अधिकार दें कि वह आपमें अपना जीवन जीएं। जब वह ऐसा पवित्रआत्मा की सामर्थ मे होकर करता हैं तब आप एक सच्ची धार्मिकता को उत्पन्न होते हुए देखेंगे।

- जब नया जन्म हो जाता है जिसमे आत्मिक जीवन का आरम्भ होता है तब आपका परिवार, मित्र, सम्बन्धी, सहकर्मी एक बड़े बदलाव को देखेंगे क्योंकि यीशु की धार्मिकता आप में से निकलने लगेगी <u>क्योंकि आप अपने अन्तर में नए और बदले हुए होंगे</u>।

संसार	**राज्य**
जितना ले सकते हो ले लो	इस पृथ्वी पर धन जमा न करो
अपने आप की पहले चिन्ता करो	यदि अपने जीवन को बचाओगे तो उसे खोओगे पर यदि अपने जीवन को खोओगे तो पाओगे
जैसा लोग तुम्हारे सथ करते हैं तुम भी वैसा ही करो	अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुम्हें श्राप देते हैं, उन्हें आशिष दो जो सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो

अच्छाई और बुराई दोनों निश्चित हैं!

''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अंधियारे को उजाला और उजाले को अंधेरा ठहराते हैं और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा करके मानते हैं'' – यशायाह5:20

4. सच्ची धार्मिकता उत्पन्न होती है
मती 5 : 20

फरीसी = **बाहरी** ..... धार्मिकता

आत्मिक नया जन्म = **भीतरी** ..... धार्मिकता

''धार्मिक लोग'' हमारे हृदय में राज्य करते हैं

''जो पाप से अनजान था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जांए'' – 2 कुरिन्थियों 5:21

परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है हम उसी तेजस्वी रूप मं अंश–2 करके बदलते जाते हैं – 2 कुरिन्थियों 3:18

मैं मसीह के साथ क्रुस पर चढ़ाया गया हूं और जीवित न रहा पर मसीह मुझमें जीवित है – गलातियों 2:20

समापन – 1 यहून्ना 5 : 11,12

और ये गवाही है कि : परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और ये जीवन उसके पुत्र में है , जिसके पास पुत्र है उसमें जीवन है, जिसके पास पुत्र नहीं उसमें जीवन नहीं।

विश्वास ही वह हाथ, जो परमेश्वर का अनन्त उपहार अर्थात आत्मिक जीवन पाने के लिए बढ़ता है।

समीक्षा :

- हमने सीखा यीशु मसीहत का केन्द्र है एक विश्वासी वह है जो यीशु को प्रभु मानता है, उससे प्रेम करता है, उस पर भरोसा रखता है और उसकी आज्ञा पालन करता है।

- अब राज्य में प्रवेश होने का रास्ता उन कामों के द्वारा जिन्हे नही हम करते हैं परन्तु एक आत्मिक आश्चर्यकर्म को प्राप्त करने का निवेदन करने के द्वारा — जिसे नया जन्म कहते हैं।

- मैं जानता हूं कि मुझे हृदय बदलने की जरूरत है, मुझे नए जन्म की जरूरत है! यह कैसे हो सकता है?

समापन — 1 यहून्ना 5:10—12... ''और ये गवाही है कि : परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और ये जीवन उसके पुत्र में है, जिसके पास पुत्र है उसमें जीवन है, जिसके पास पुत्र नहीं उसमें जीवन नहीं।''

- पद 11 — एक वरदान है, न कमाया जाता है ओर न हम इसके योग्य है।

- पद 12 — यह उसके पुत्र में दिया गया है

- उदाहरण — किसी के लिए कोई मंहगा उपहार खरीद कर देना उस उपहार की कीमत आपकी सारी धन सम्पति के बराबर है। परन्तु क्योंकि आप उन्हे बहुत प्रेम करते हैं, आप उनके लिए कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। उन्हें यह उपहार दीजिए। अब उनसे पूछिए, ''यह कब आपका बन गया?'' प्रत्युतर होगा = ''जब मैंने आपको उपहार दिया तब नहीं पर जब आपने इसे ले लिया तब।''

- विश्वास ही वह हाथ, जो परमेश्वर का अनन्त उपहार अर्थात आत्मिक जीवन पाने के लिए बढ़ता है।

- ''वह जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है।''

संसार	**राज्य**
जितना ले सकते हो ले लो	इस पृथ्वी पर धन जमा न करो
अपने आप की पहले चिन्ता करो	यदि अपने जीवन को बचाओगे तो उसे खोओगे पर यदि अपने जीवन को खोओगे तो पाओगे
जैसा लोग तुम्हारे सथ करते हैं तुम भी वैसा ही करो	अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुम्हें श्राप देते हैं, उन्हें आशिष दो जो सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो

अच्छाई और बुराई दोनों निश्चित हैं!

''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं, जो अंधियारे को उजाला और उजाले को अंधेरा ठहराते हैं और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा करके मानते हैं'' – यशायाह 5:20

4. सच्ची धार्मिकता उत्पन्न होती है
मती 5 : 20

फरीसी = **बाहरी** ..... धार्मिकता

आत्मिक नया जन्म = **भीतरी** ..... धार्मिकता

''धार्मिक लोग'' हमारे हृदय में राज्य करते हैं

''जो पाप से अनजान था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' – 2 कुरिन्थियों 5:21

परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है हम उसी तेजस्वी रूप मं अंश–2 करके बदलते जाते हैं – 2 कुरिन्थियों 3:18

मैं मसीह के साथ क्रुस पर चढ़ाया गया हूं और जीवित न रहा पर मसीह मुझमें जीवित है – गलातियों 2:20

समापन – 1 यहून्ना 5 : 11,12

और ये गवाही है कि : परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और ये जीवन उसके पुत्र में है , जिसके पास पुत्र है उसमें जीवन है, जिसके पास पुत्र नहीं उसमें जीवन नहीं।

विश्वास ही वह हाथ, जो परमेश्वर का अनन्त उपहार अर्थात आत्मिक जीवन पाने के लिए बढ़ता है।

1. परमेश्वर ने क्या कहा वह जो ''नए जन्मे'' हैं उनके लिए क्या करेगा? देखिए यहेजकेल 36:26—27 भजन 51:10

2. 2 कुरिन्थियों 5:17 में हम सीखते हैं कि जो वास्तव में ''नए जन्में'' हैं वे एकदम आत्मिक रूप से नए व्यक्ति बन जाते हैं और बदलने की प्रक्रिया मे हैं।

   – इस बदलाव का स्त्रोत क्या हैं (देखिए रोमियों 8:9, 1कुरिन्थियों 6:16—20)

   – ये बदलाव व्यवहारिक अनुभव में कैसा होगा ?(आप इफिसीयों 4:22—23 से मदद ले सकते हैं)

   – यदि कुछ बदलाव नहीं दिखता तो क्या? (देखिए मती 7:18—21, याकूब 3:10—12)

3. रोमियों 12:1—2 मसीही सम्बन्धों के बारे में क्या सिखाता है?

   – प्रभु को?

   – संसार को?

व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने के लिए

ये दो घेरे दो प्रकार का जीवन प्रस्तुत करते हैं :

स्वयम् नियंत्रित जीवन 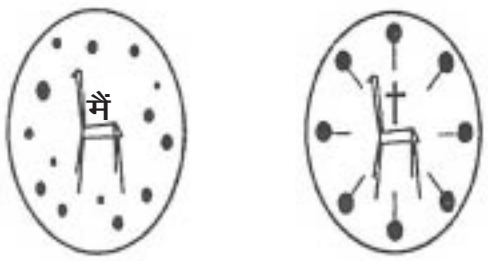

मसीह नियंत्रित जीवन

कौन सा घेरा आपके जीवन को प्रकट करता है?
कौन सा आप अपने जीवन के प्रकट करने के लिए चाहते हैं?

क्या ये प्रार्थना आपके हृदय की इच्छा को प्रकट करती है?

''प्रभु यीशु, मुझे तेरी आवश्यकता है, मैं अपने जीवन का द्वार खोलता हूं और तुझे अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण करता हूं, मेरे पापों को क्षमा करने हेतू धन्यवाद, मेरे जीवन के सिहांसन पर नियंत्रण कर, मुझे ऐसा व्यक्ति बना जैसा तू चाहता है''।

यदि ये करती है, तो ये प्रार्थना अभी करें और मसीह आपके जीवन में अपनी प्रतिज्ञानुसार आएगा

प्रथम

(1) अधिवेशन 2 के प्रश्न पत्र के उत्तरों को देखें। आप उत्तर दे सकते हैं कि वे अपने प्रश्न पत्र को जांच लें या जल्दी से दूसरे को उत्तर देने दें। ये बुद्धिमानी नहीं हैं कि इस पर अधिक समय बिताया जाए जब तक कि कोई महत्वपूर्ण प्रश्न ना हो जो उनके गृहकार्य और दोहराने में मदद कर सके।

(2) वे जो भर गए थे, उन्हें इक्ट्ठा करें (दूसरे सप्ताह उन्हें वापस दे दें, हर सप्ताह प्रश्नों को देखें ये आपकी मदद करेगा कि समूह कहां पर है?)

प्रारम्भ करने का अच्छा तरीका — अपने समूह में सभी को कहने का अवसर दें।

''उन दो दिलचस्प घटनाओं के बारे में जो आप अभी सोच सकते हैं, जो आपके परिवार में घटी जब आप बड़े हो रहे थे।''

तब — आप इस सप्ताह के वार्तालाप को कुछ नीचे दिए हुए के अनुसार उत्तेजित कर सकेगें:

1. यह कैसे संभव है कि निकुदेमुस जैसा एक अच्छा व्यक्ति परमेश्वर के राज्य को न तो देख सकता था और न ही उसमें प्रवेश कर सकता था।

2. 1 कुरिन्थियों 2:14 पढ़िए — समूह को प्रोत्साहित करें कि वह अपने और अपने जानकार लोगों के जीवनों से आत्मिक अंधेपन के बारें में बता सकें।

3. ''आंतरिक'' धार्मिकता और ''बाहरी'' धार्मिकता की भिन्नता पर विवाद करें।

   नोटः निश्चय करें कि वे इसे समझते हैं कि ''वह हमारी धार्मिकता है''! कुजीं यीशु है, जो अपना जीवन हममें जिए और हमें अपनी नांई बनाए।

4. यहून्ना 15:16—21 पढ़िए — समूह को अपने अनुभव बताने दें या दूसरों के जीवन से कि यीशु न यहून्ना 15 में जो कुछ अपने चेलों से कहा जो आज के अनुयायीयों के लिए कितना सत्य है?

आगामी सप्ताह के लिए

उनका ध्यान प्रश्न पत्र 3 पर खींचिए, उन्हें इन प्रश्नों पर ध्यान देंने के लिए उत्साहित करें ।